Historicity Research Journal
Volume 2 | Issue 3 | Nov 2015

Impact Factor : 0.4521(UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

श्री प्रभुदयाल चौबे का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

बी.सी. जोशी[1] , ममता वर्मा[2]

[1]Principal Gov. College Badhani (mp).
[2]Research Scholar Govt. Hamidia arts & comm. college Bhopal (mp).

शोध सारांश

भारत के इतिहास में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण रहा है। भारत को अंग्रेजों से आजाद कराने के लिए देश के प्रत्येक हिस्से में आन्दोलन हुए। मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में भी आजादी की लड़ाई लड़ी गई। जहां पूरे देश में प्रजामण्डल की स्थापना की गई वही राजगढ़ जिले की जीरापुर तहसील में प्रजामण्डल की स्थापना श्री प्रभुदयाल चौबे द्वारा हो सकी।

शब्द संकेत –

स्वतंत्रता संग्राम, मध्यभारत, प्रजामंड़ल, जेल डायरी।

प्रस्तावना

जीरापुर तहसील, इन्दौर राज्य(म.प्र.) का भू-भाग जो मध्यभारत निर्माण के समय जिला राजगढ़ में विलीन किया गया। पूर्व में जीरापुर इन्दौर राज्य के रामपुर जिला का एक परगना था।[1] जीरापुर प्रजामण्डल की संबध्यता "इन्दौर राज्य प्रजामण्डल" से रही। यहाँ इन्दौर राज्य प्रजामण्डल के नेताओं द्वारा समय-समय पर दौरे किए जाते रहे।

श्री प्रभुदयाल चौबे जी का जन्म १० जुलाई १९१५ ई. को नलखेड़ा (जिला शाजापुर) में हुआ था। आपने मैट्रिक सन् १९३६ ई. में द्वितीय श्रेणी में पास की। आपके पिताजी श्री भंवरलाल चौबे नलखेड़ा में जमीदार थे।[2]

आपके मन में देशप्रेम की तीव्र भावना बचपन से ही थी। लेकिन सन् १९२९ ई. से आपने स्वतन्त्रता आन्दोलन में विधिवत रूप से भाग लिया। सन् १९३०-३२ ई. में विदेशी वस्तु बहिष्कार आन्दोलन में बढ़चढ कर भाग लिया। सन् १९३३ ई. में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर, अध्यक्षता महात्मा गांधी तथा सन् १९३५ ई. में अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन इन्दौर, अध्यक्षता महामना पंडित मदनमोहन मालवीय, दोनों सम्मेलनों में स्वयं सेवक का कार्य किया। १३.०८.१९३५ से १९.०८.१९४२ तक ग्राम सेवा कुटीर सेंधवा में आदिवासियों के बीच जनजागरण का कार्य किया। २०.०८.१९४२ से २९.११.१९४३ तक 'अंग्रेजों भारत छोड़ोश में गिरफ्तार होकर[3] २ माह सेंधवा, ७ माह मानपुर, ८ माह इन्दौर सेन्ट्रल जेल में रहे। २ अक्टूबर १९४२ ई. को सेंधवा के किले पर पुलिस को पूर्व ऐलान करके प्रातः ८ बजे से शाम ४ बजे तक, होल्कर स्टेट के झण्डे को

उतारकर तिरंगा फहराया।[४] आपका देशप्रेम डायरी लिखने के माध्यम से भी सामने आया। जब आप जेल में थे तब भी आप डायरी लिखा करते थे। आपकी डायरी में देश की खबरे, भजन, कविता एवं गीत होते थे जिनके माध्यम से आपने जनता को आजादी के लिए सदैव तैयार रखा। आपकी भजन एवं गीतों की डायरी में एक गीत यह भी था जो स्वतंत्रता संग्राम के समय मालवांल में बहुत लोकप्रिय हुआ–

मजा आएगा जेल के जीवन में.
काली–पीली दाल मिलेगी, कच्ची पक्की रोटी ।
खाने वाले की किस्मत से, वह भी मोटी मोटी।।[५]

श्री चोबे की डायरी में ये कविता लिखी है जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है–

जालिम जुल्म करों तुम जी भर हमें जरा इन्कार नही हैं ।
पाषाणों के संघर्षो मे, बहते थे जीवन के पानी ।
बाधाओं के मस्तक पर, लहराते सागर तूफानी ।
तुम वार करो हम लहरायें, तुम काटो हम जुड़–जुड़ जायें।
तुम हमें पकड़ने दौड़े पागल, लड़ोगें हम हाथ न आये ।
बहता पानी काट सके जग में, ऐसी तलवार नही ।
जालिम जुल्म करो तुम जी भर हमें जरा इन्कार नही है।[६]

इस कविता ने लोगों को प्रभावित कर राष्ट्रप्रेम की ओर उन्मुख किया और सभी ने कंधो से कंधा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया।इन्दौर राज्य प्रजामण्डल के नेताओं में से श्री रामेश्वर दयाल तोतला, श्री मिश्रीलाल गंगवाल, श्री तात्या सरवटे, श्री नन्दलाल जोशी, श्री बैजनाथ महोदय, श्री परूलेकर आदि ने जीरापुर क्षेत्र के दौरे किए एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं से सम्पर्क कर सन् १९४४–४५ ई. में जीरापुर प्रजामण्डल की स्थापना की एवं स्थायी कार्यकर्ता के रूप में श्री प्रभुदयाल चौबे को नियुक्त किया गया। वह पुर्ण कालिक कार्यकर्ता के रूप में जीरापुर में सन् १९४४ ई. में आकर रहे।७ श्री प्रभुदयाल चौबे के इस क्षेत्र में आते ही प्रजामण्डल का कार्य जोर–शोर से प्रारम्भ हो गया। गांवों के दौरे किए गए गांव के लोगों में देशप्रेम की भावना जागृत कि गई।[८] श्री प्रभुदयाल चौबे ने सन् १९४३ से १९४७ ई. तक जिला गरोठ, इन्दौर रियासत के जिला प्रजामण्डल मंत्री, सुनैल परगना प्रजामण्डल के अध्यक्ष, भानपुरा परगना प्रजामण्डल के मंत्री के रूप में एवं खिलचीपुर, जीरापुर, माचलपुर क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य किया। श्री विनोबा भावे के साथ भू–दान आन्दोलन से जुड़े रहे। स्वयं की जमीन भी भू–दान में दे दी ।[९]

स्वतंत्रता के पश्चात् सन् १९४८ ई. से १९५२ ई. तक महिदपुर तथा राजगढ़ जिला कांग्रेस के मंत्री रहे। सन् १९५२ ई. के आम चुनाव में विधायक बने। मध्यप्रदेश निर्माण पश्चात सन् १८५७ ई., १९६७ ई. तथा १९७२ ई. में चुनाव में विजयी रहे। इस दौरान जीरापुर में छापी बॉध का निर्माण एवं राजगढ़ के पास पहाड़ी पर मॉ जालपा मन्दिर का निर्माण विशेष उपलब्धियों में रहा। स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ जिला राजगढ़ के आजीवन अध्यक्ष रहे। इंटक ग्रामीण मध्यप्रदेश के अध्यक्ष रहे। स्काउट एवं गाईड जिला राजगढ़ के उपाध्यक्ष रहे। भूमि विकास बैंक जिला राजगढ़ के अध्यक्ष रहे। मध्यप्रदेश कृषि गौ–सेवा संघ के मन्त्री रहे। केन्द्रीय नशाबन्दी समिति म.प्र. के सदस्य रहे। मध्यप्रदेश गौ–सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे।[१०] भारत सरकार द्वारा सन् १९७२ ई. को रजत जयन्ती के अवसर पर श्री प्रभुदयाल चौबे जी को सम्मानस्वरूप ताम्रपत्र भेंट किया गया।[११]

ताम्र–पत्र

२५ अप्रैल, २००१ में श्री प्रभुदयाल चौबे जी का स्वर्गवास हुआ। १२ आप महान स्वतन्त्रता सेनानी रहे। आपकी देशप्रेम, भावना, कर्तव्य परायणता, कर्मठता सदैव स्मरणीय रहेगी।

सन्दर्भ

१.प्रलयंकर,, सूर्यनारायण, स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास, जिला राजगढ़, ब्यावरा, १९८६, पृष्ठ. १३
२.चौबे, प्रभुदयाल के पौत्र तरूण चौबे जी का व्यक्तिगत साक्षात्कार,२६.०६.२०१४
३.चौब, प्रभुदयाल की संक्षिप्त जीवनी, पृष्ठ. १
४.व्यास, कैलाश नारायण निष्काम कर्मयोगी पण्डित प्रभुदयाल चौबे (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) स्मृति ग्रन्थ, जीरापुर, २००६ए पृष्ठ . ३३२
५.वही, पृष्ठ दृ २४
६.चौबे, प्रभुदयाल की जेल डायरी के पृष्ठ .४२ से उद्धृत
७.स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास, जिला राजगढ, पृष्ठ दृ १३ए १४
८.निष्काम कर्मयोगी पण्डित प्रभुदयाल चौबे ;स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी द्धारा स्मृति ग्रंथ, प्रष्ठ दृ १५५
९.चौबे, प्रभुदयाल जी की संक्षिप्त जीवनी, पृष्ठ दृ १
१०.वही, पृष्ठ दृ १
११.निष्काम कर्मयोगी पण्डित प्रभुदयाल चौबे ;स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी द्धारा स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ दृ ५६
१२.चौबे, प्रभुदयाल के पौत्र तरूण चौबे का व्यक्तिगत साक्षात्कार, २६.०६.२०१४